शोध-सारांश

“ ‘शिगाफ़’ और ‘शिकारगाह’ में सामाजिक विस्थापन ”

विस्थापन आज पूरे विश्व में एक बड़ी परिघटना का रूप धारण कर चुका है। कई हजारों परिवार या पूरा का पूरा समुदाय विभिन्न वजहों से विस्थापित कर दिया जाता है। आबादी जो विस्थापित हो रही होती है उसके लिए विस्थापन मात्र एक परिघटना नहीं होता है। सदियों से जिन जड़ों से वह जुड़े होते हैं उन्हें जब एक झटके से अलग कर दिया जाता है तो यह आबादी एक संकटपूर्ण जीवन व्यतीत करने को मजबूर हो जाती है। जड़ से उखड़ने का दर्द क्या है यह वहीं व्यक्ति जानता है जिसने यह दर्द और पीड़ा सहीं हो। अपने अतीत से विस्थापित ये लोग टूटते वर्तमान के कारण भविष्य की अनजानी दिशाओं की ओर निकल पड़े हैं। अपनी जमीन से अलग होना सिर्फ जमीन से अलग होना नहीं है बल्कि यह पूरी प्रक्रिया इन विस्थापितों को भविष्य के प्रति आशाहीन कर देती हैं।

आज के संदर्भ को देखें तो विस्थापन के अनेक रूप सामने आते हैं। भारत-विभाजन ने लाखों लोगों का ऐतिहासिक विस्थापन किया है और इस विस्थापन से जो समस्याएँ पैदा हुई हैं उन समस्याओं के अनेक रूप हिंदुस्तान, पाकिस्तान और बंगेलादेश आदि देशों की जनता झेल रही है। विस्थापन के कारणों में विकास योजनाएँ भी महत्वपूर्ण मानी गई हैं। आजाद भारत में आधुनिकरण की प्रक्रिया का आधार ‘आर्थिक वृद्धि’ को माना गया और उसे ही विकास का पर्याय भी कहा गया है। सरकार की इन विकास नीतियों का सबसे अधिक प्रभाव दलितों, आदिवासियों, महिलाओं और बुजुर्गों पर पड़ा है। विस्थापन के बाद यदि इन लोगों को कहीं एक स्थान पर न बसाया जाए तो इससे महिलाओं और बच्चों को सबसे अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। विस्थापन की यह प्रक्रिया केवल विभाजन और औद्योगिक विकास से हुआ विस्थापन पर ही समाप्त नहीं हुई, बल्कि वर्तमान में विभिन्न रूप ले कर यह प्रक्रिया अधिक ज्वलंत हुई है। जैसे बेरोजगारी, खाद्य-संकट, सांप्रदायिक हिंसा, आतंकवाद, प्रकृतिक कारण आदि।

9 जनवरी 1990 के दिन कश्मीरी पंडितों को अपनी धरती से बेदखल कर दिया। सालों से अपने ही देश में कश्मीरी विस्थापित शरणार्थीयों जैसा जीवन जी रहे हैं। आज तक इन कश्मीरी विस्थिपितों की पीड़ा को किसी भी राजनैतिक पार्टीयों ने गंभीरता से नहीं देखा। सांप्रदायिकता एक आधुनिक विचारधारा है, साम्प्रदायिक दंगे इस विचारधारा के अनेक परिणामों में से एक है। मनीषा कुलश्रेष्ठ और पंजाबी लेखिका सुरिन्दर नीर ने अपने-अपने उपन्यासों में सांप्रदायिक दंगों का एकदम यथार्थ रूप चित्रित किया है। 'शिगाफ़' में लेखिका ने कश्मीर की समस्याओं पर बात की है। विस्थापन, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, सामाजिक सांस्कृतिक सभी समस्याओं व दर्द का खुलासा 'शिगाफ़' में है। सुरिन्दर नीर 'शिकारगाह' उपन्यास में सांप्रदायिक दंगों का चित्रण करती हैं। कश्मीरी दहशतवाद के कारण कश्मीर में अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडितों का उजड़ना और सिक्खों का आपसी भाईचारा बचाए रखने का संघर्ष किस प्रकार आपसी प्रेम और सियासत को पुनःसृजित कर रहा है, इस अनुभव को पंजाबी उपन्यास 'शिकारगाह' का आधार बनाया है। आतंकवाद के कारण हुआ कश्मीरी हिंदुओं का विस्थापन उन्हें आज अक उभर नहीं पाया है। इस विस्थापन की क्रिया और उसके परिणाम एक अमानवीय त्रासदी है इसको दोनों उपन्यासों में दिखाने का प्रयास किया गया है। 'शिगाफ़' और 'शिकारगाह' उपन्यास के माध्यम से कश्मीरी विस्थापन को दिखाने की कोशिश दोनों लेखिकाओं ने की है। दोनों ही उपन्यास हमें कश्मीर के सामाजिक जीवन और वहाँ की परिस्थितियों से रुबरु कराते हैं। विस्थापन एक ऐसी प्रक्रिया है जो केवल केवल आर्थिक और शारीरिक कष्ट ही नहीं देता बल्कि वह मानसिक रूप से भी प्रभावित करता है। विस्थापन लोगों का पूरा मनोविज्ञान ही बादल कर रख देता है। 'शिगाफ़' उपन्यास में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने विस्थापन के कारण स्त्री की मानसिकता, उसके व्यवहार और उसकी स्थिति में आए परिवर्तनों को दिखाया है। आतंकवाद के साये से कश्मीर तो उजड़ता दिखाई देता है परंतु वहाँ की स्त्रियाँ और उनका जीवन भी उजड़ चुका है। दहशतगर्दी के दौर में तमाम मुश्किलों को सह कर स्त्री जीवन निर्वाह करती है।

अतः कई सालों से जो कश्मीरी हिन्दू अपने ही देश में विस्थापितों का जीवन जी रहे हैं। आज तक इनके दर्द और पीड़ा पर किसी भी राजनीतिक पार्टी ने ध्यान नहीं दिया। आज जब उनके पुनर्वास की बात हो रही है, परंतु क्या आज भी कश्मीर घाटी इनके लिए सुरक्षित है ? कश्मीर से विस्थापित हुए इन हिंदुओं की वापसी बहुत जरूरी है। ये कश्मीरी अपनी संस्कृति के लिए जाने जाते हैं, देश की गरिमा और गौरव के लिए जरूरी है कि इनको दुबारा से घाटी में बसाया जाए।

Research summary

" **SOCIAL DISPLACEMENT IN 'SHIGAAF' AND 'SHIKARGAAH'** "

Displacement in today's world has become a prevalent phenomenon. Thousands of families or entire communities are displaced for varied reasons. For the population which is displaced, displacement is not just a phenomenon. The roots that they have been attached to since ages are separated from them suddenly; they are forced to live in such difficulties. The pain of being uprooted can only be understood by an individual who has suffered of it. Displaced from their past, these people with a problematic present are heading for an unknown and directionless future. To be parted away from one's land is not just a parting away from land; this entire process makes these displaced souls hopeless regarding the future.

In today's context displacement can be seen in a lot of different versions. India's partition led to a historical displacement of lakhs of people and the problems that arose due to this displacement can be witnessed in many versions across India, Pakistan and Bangladesh's population. Development planning is considered as one of the important reasons for displacement. "Economic Growth" is considered as the basis of Modernization in independent India, and it was also referred to as a synonym of development. Dalits, tribal, women and senior citizens were the most affected because of these government policies. If

after displacement these people are not provided proper living accommodations it creates a lot of difficulties for the women and children especially. The problem of displacement did not end with just partition and industrial development instead; this problem has taken a gigantic face. Problems like; unemployment, food shortage, communal violence, environment issues etc.

On 9 January 1990, Kashmiri pundits were forced to leave their own lands. Since years now, Kashmiri pundits are living like immigrants in their own country. And even today political parties fail to take the problems of Kashmiri Pundits seriously. Sectarianism is a modern ideology, and communal violence is one of its outcomes. In their novels, Manisha Kulsreshtha and Surinder Neer a Punjabi author; create a real life like image of this communal strife. In the novel 'Shigaaf' the author talks about Kashmir issues. Displacement, secularism, sectarianism, terrorism, social and cultural problems and the pain is portrayed in Shigaaf. In 'Shikargaah' Surinder Neer creates an image of the communal strife. Destruction of the lives of Kashmiri Pundits (minority) because of terrorism in the state and the struggle to maintain brotherhood amongst the Punjabi Sikhs and how this gives way to harmony, love and politics forms the base of Punjabi Novel; 'Shikargaah'. The displacement of Kashmiri Pundits due to terrorism has not ceased till date. Both the novels try to portray this issue of displacement and it process. Both authors have tried to give voice to the Kashmiri Pundit's displacement through 'Shigaaf' and 'Shikargaah'. Both the novels try to familiarise its readers to the social lifestyle in Kashmir and the situation the

state. The problem of displacement not only causes financial and physical problems but also has an adverse effect on the mental health. Displacement completely changes the psychology of the people. Manisha Kulsreshtha in her novel 'Shigaaf' creates the picture of the difficulties a woman faces due to displacement from her mentality to her behaviour and how it transforms with displacement. The state of Kashmir seems uprooted because of terrorism but it also destroyed the lives of women there. A woman even in the times of terrorism and huge difficulties tries to live through.

Since many years now, Kashmiri Hindus are living the lives of displaced in their own country. No political party has ever attended to their pain and problems. Now when the talks about relocating to their homes are going around, shouldn't we see if the valley is safe for them? Their return is very important. Kashmiri are known for their culture and it is utterly necessary that for the country's honour and dignity they should be relocated to the valley safely.